IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सुशीला टाकभौरे की कहानियों का दलित नारी पात्रों का विमर्शकारी: विश्लेषणात्मक अध्ययन

देवी सिंह
शोधार्थी हिन्दी विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सार

नारी में चेतना, शिक्षा, जागृति तथा स्वावलंबन जितना आवश्यक है, स्वच्छंदता उतनी ही हानिकारक भी है। नर–नारी की संपूर्णता एक–दूसरे के सहयोग में ही निहित है न कि द्वंद और प्रतिशोध में, क्योंकि प्रतिशोध तथा द्वंद विनाश की और ले जाते हैं। वर्तमान समय में नारी यथार्थ शिक्षा, स्वतंत्रता और स्वावलंबन की सीढ़ी पर अग्रसर है पर पुरुष के प्रति प्रतिशोध की बजाय सहयोगात्मक रवैये से वह परिवार और स्वयं का विकास सही दिशा में कर पाएगी। नारी, पुत्र अथवा बालक का भविष्य बनाती है, अतः उसमें वही संस्कार डालने होंगे कि वह अपनी पत्नी को सही अर्थों में अर्धांगिनी समझे। नारी ही नारी की दुश्मन न बनकर पुत्रवधू को पुत्री के समान प्यार और सम्मान दे। सास–बहू के रिश्ते के बीच की खाई जितनी कम होगी, नारी परिवार और समाज में उतनी ही उज्जवल छवि को पा सकेगी।

सुशीला टाकभौरे ने नारी की दशा और दिशा के बारे में कई प्रकार से सुझाव दिये। नारी अधिक से अधिक सशक्त और व्यवहारिक बने तभी उसके जीवन में बदलाव आ सकता है। समाज और राष्ट्र के लिए नई चुनौती एवं संभावना हैं।

मुख्य बिंदु– शिक्षा, जागृति, स्वावलंबन, सहयोगात्मक, भविष्य, संस्कार, प्यार, बदलाव, व्यवहारिक, चुनौती, संभावना।

शोध प्रपत्र

सुशीला टाकभौरे ने अपने कथा साहित्य में कई कहानियाँ दलितों पर लिखी जिनका संबंध दलितों की समस्याएँ जीवन जीने की शैली, मनागत भाव, मानवीय मूल्यों का है। ये सभी दलितों की समग्रता और उनकी व्यवहारिकता को प्रदर्शित करती है। जिस कारण से उनका जीवन अधिक संतुष्ट नहीं है। उनके समक्ष कई प्रकार की समस्याये हैं।

संघर्ष नामक कहानी में छुआछूत को दर्शाया है। ''छुआछूत मानने वाले लड़कों से वह भी बदला लेता। उनको दौड़ते देखकर बीच में अपनी टाँग अड़ा देता, लड़के गिर जाते। वह वहाँ से भाग जाता कक्षा में सबकी नजर बचाकर उनका बस्ता डेस्क से नीचे गिरा देता और दूसरी तरफ देखने लगता, जैसे उसे कुछ पता ही नहीं है। पूछने पर भोला बनकर कहता– मैंने नहीं गिराया। उसने गिराया है। वह दूसरे लड़कों की तरफ इशारा कर देता। तब वे लड़के आपस में लड़ते, वह मजे से देखता रहता।''[1] सुशीला टाकभौरे ने संघर्ष नामक कहानी में अस्पृश्यता को दर्शाया है। दलित परिवारों के बच्चों को जीवन में गिरने पर एक हीन भावना पैदा होती है। बहुत से बच्चों में छुआछूत की प्रवृत्ति को घर वाले ही प्रवृत्त कराते हैं। जिससे उनके जीवन में एक ग्रंथि उत्पन्न हो जाती है। जो सामाजिक विकास में बाधक होती है।

इसी क्रम में सिलिया नामक कहानी में सामाजिक मान, सम्मान एवं प्रतिष्ठा की बात की हैं। शादी संबंध में गरीबी, अमीरी किस प्रकार हावी रहतो है।

तब सिलिया की माँ अपने आने वालों को अच्छी तरह समझाकर कहती है। ''नहीं भैया, यह सब बड़े लोगों के चोचले हैं। आज समाज को और सबको दिखाने के लिए हमारी बेटी से शादी कर लेंगे और कल छोड़ दिया तो?..... हम गरीब लोग उनका क्या कर लेंगे? अपनी इज्जत अपने समाज में रहकर भी हो सकती है। उनकी दिखावे की चार दिन की इज्जत हमें नहीं चाहिए। हमारी बेटी उनके परिवार और समाज में वैसा मान–सम्मान नहीं पा सकेगी, न ही फिर हमारे घर की ही रह पाएगी। न इधर की न उधर कि हम से भी दूर कर दी जाएगी। हम तो नहीं देंगे अपनी बेटी को। हमीं उसको खूब पढ़ाएंगे, लिखाएंगे। उसकी किस्मत में होगा तो इससे ज्यादा मान–सम्मान वह खुद पा लेगी..... अपनी किस्मत वह खुद बना लेगी।''[2]

सिलिया एक गरीब परिवार की लड़की है। छुआछूत अस्पृश्यता के कारण हमारे समाज आज भी ग्रसित है, जिस कारण से परिवार और समाज में वैसा मान–सम्मान नहीं मिलता मान–सम्मान तभी प्राप्त होगा तब अपने जीवन को शिक्षित होकर लक्ष्य प्राप्त कर लें तभी वास्तविकता यथार्थ से परिचय हो सके। सिलिया इस कहानी की मुख्य पात्र जो अस्पृश्यता एवं छुआछूत के दंश को झेल रही है।

''स्वागत के उत्तर महिला ने अपना भाषण प्रारंभ किया। सुंदर स्वर्ण एक युवती तत्परता के साथ उसके पीछे तश्तरी में शीतल जल गिलास आदरभाव से लिए खड़ी थी। भाषण देते हुए, बीच में दो घूँट पानी पीकर महिला पुरानी स्मृतियों में क्षण भर के लिए खो गयी, फिर उसने गर्व के साथ अपने आसपास देखा, सामने बैठे विशाल जनसमूह को देखा, और परिवर्तनवादी विचारों से परिपूर्ण अपना भाषण जारी रखा..... वह महिला कोई और नहीं सिलिया थी।''[3]

सिलिया कहानी में लेखिका ने परिवर्तनवादी विचारधारा को दर्शाया है। जिससे साहित्य जगत में अधिक से अधिक खुलापन आ सके। जीवन के यथार्थ मूल्यों से परिचित हो सकें। समाज को परिवर्तनवादी विचारधारा की बहुत बड़ी आवश्यकता है। जीवन के मूल्य बदल सकते है, तभी समाजवाद का प्रारूप बदल जायेगा।

इसी तारतम्य में छौआ माँ नामक कहानी के द्वारा समाजवादी परिवर्तनवाद लेखिका लाना चाहती है। उसके मन का दुख और आक्रोश बादल की तरह फट पड़ा– ''हमको नीच कहो हो, हम गरीब हैं, हमारे पास धन साधन नहीं हैं, जई से हमें छोटे कहो हो.....? हमें डराओ–धमकाओ हो..... हमें लाचार बनाकर रखो हो.....। मगर तुम भी समझ लो, अब छोटो को कम मत समझना। जरा सी चींटी भी हाथी को पछाड़ देती है। हम ऐसे भी गए बीते नहीं हैं। अगर हम अपनी वाली पर आ गए, तो बहुत नुकसान मैं रहोगे तुम..... मेरी सेवा को नीच काम कहे हो, हमको नीची जात का कहे हो। जाओ, अब अपन काम खुद संभालो..... खुद करो अपने सब काम.....। गाँव वाले सकते में आ गए। इसके बाद छौआ माँ को बुलाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई।''[4]

छौआ माँ नामक कहानी में लेखिका ने अपने स्वयं अभिशापित किया है। बहुत से लोग अपने आक्रोश को व्यक्त करने के लिए नीच, गरीब, दलित, वंचित कह कर संबोधित करते हैं। जिससे जीवन का विकास अवरोध हो जाता है। धन के माध्यम से गरीबी–अमीरी का रेखांकन हो जाता है। एक दूसरे के प्रति अरुचिपूर्ण भाषा का प्रयोग करते हैं। परंतु छौआ माँ अपने आप में सशक्त एवं ताकत बल के साथ–साथ विचारों की उत्तेजना हैं।

इसी क्रम में बंधी हुई राखी नामक कहानी में रिश्तो के संबंध में अपने विचारों को व्यक्त किया है। राखी बँधते ही, मेरे समीप आकर उसने बड़ी शरारत और चंचलता के साथ कहा– ''मेरी अच्छी दीदी.....'' और हँसती आँखों से मुझे देखते हुए, बच्चों जैसे कूदकर वहाँ से बाहर भाग गया। मैं उसे देखती हुई अपनी अनुभूति में डूबी रह गई। उस क्षण के अनुभव से मैं आज भी उभर नहीं सकी। बाद में पता चला, उसकी कोई बहन नहीं है। उसने मुझे अपनी बहन मान लिया है।''[5]

सुशीला टाकभौरे ने बंधी हुइ राखी नामक कहानी में राखी के महत्व को दर्शाया है। राखी का संबंध जीवन की कई अनुभूति से है। जिससे रक्षा के भाव विचार और भावनाये। राखी का पर्व लोकत्व, लोक संस्कृति एवं लोक परंपरा का प्रतीक माना जाता है। जिससे बहुत से शिष्टापूर्ण भाव, विचार मातृत्व जिससे आधार यह त्योहार मनाया जाता है।

सुनीता ने अपनी बड़ी बहन को उसकी गलती बताते हुए उसे अपनी बेटियों की सफलता के विषय में बताया– ''मैंने अपने बच्चों के स्वभाव व्यवहार को स्वयं गढ़ा है। उन्हें उठते–बैठते अच्छी बातें सिखाई हैं। उनकी शिक्षा और जरूरतों पर पूरा ध्यान दिया है। उन्हें अच्छा बनने के पूरे अवसर दिए हैं। प्यार और सम्मान के साथ उनके व्यक्तित्व विकास में पूरा योगदान दिया। ये सभी माता पिता के कर्तव्य हैं कि वे अपने बच्चों का ऐसा ध्यान रखें। घर परिवार का वातावरण माता–पिता का सहयोग पाकर ही हमारी बेटियाँ इतनी समझदार बनी है और समझदारी के साथ सही रास्ते पर चल रही हैं।''[6]

सुशीला टाकभौरे ने गलती नामक कहानी में बच्चों के स्वभाव एवं व्यवहार, आचरण को व्यक्त किया है। बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए बच्चों को प्यार एवं सम्मान की आवश्यकता है। जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके। बच्चों को योग दक्ष एवं

विवेकशील बनाने में माता–पिता का सबसे बड़ा योगदान रहता है। प्रत्येक परिवार की बेटियाँ समझदार, संस्कारवान बने तभी समाज और राष्ट्र को आदर्श बेटियाँ मिल सकती हैं।

सुशीला टाकभौरे ने 'टूटता वहम' नामक कहानी संग्रह की मंदिर का लाभ नामक कहानी में बहुऐं और नानी की स्थिति को व्यक्त किया है। किस प्रकार से महिलाये धर्म से जुड़ी रहती हैं।

''नानी की बहन बुल्लो (विमला नाम का बिगाड़ कर बोला गया रूप) बानापुरा से दो ढाई किलो मीटर दूर सिवनी मालवा में अपने तीन बेटों के साथ रहती थी। भरा–पूरा परिवार तीन–तीन बहुँए और ढेर सारे बच्चे थे। बच्चों में कोई आठवीं–नौवीं कक्षा से ज्यादा नही पढ़ा था। बेटे बहुँए और नानी की बहन सभी सिवनी नगर पालिका में नौकरी करते थे, किसी प्रकार की कमी नहीं थी– यह सब देख समझकर नानी ने सिवनी में अपनी बहन के घर के सामने मंदिर बनवाने का निर्णय लिया था। वहाँ बीस पच्चीस घरों का वाल्मीकि जाति का मोहल्ला था। मंदिर के पूजा पाठ में पूरा मोहल्ला सहयोग देगा सहभागी होगा।''[7]

मंदिर का लाभ नामक कहानी में लेखिका ने संप्रदायवाद एवं जातिवाद को बताया है। मंदिर का संबंध धार्मिक आस्था एवं संस्कार एवं परंपराओं से है। मंदिर के द्वारा आपस में एक दूसरे में संयोगिता एवं सहभागिता रहती है। मंदिर समन्वय का प्रतीक है। जिससे कई प्रकार की संस्कृति सभ्यता का निर्धारण होता है। इसके अतिरिक्त बहुत से परिवारों की मंदिरों के माध्यम से अर्थव्यवस्था चलती है। मंदिरों के प्रति जातीयता के आधार पर नकारात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण होता है। वर्तमान समय में मंदिर संप्रदाय के प्रतीक परंतु आर्थिक दृष्टि से बाजारीकरण का प्रतीक है।

सुशीला टाकभौरे ने अपनी कहानियों में नारी विमर्श को अधिक व्यवहारिक स्वरूप दिया है। जिससे लोग अधिक से अधिक उन कहानियों को जीवन में उतारें महिलाओं को शोषण से बचाएँ। तभी जीवन के मूल्यों की रक्षा हो सकती है। लेखिका ने इन कहानियों के द्वारा विश्व के समस्त नारी जगत को परंपरावादी स्वरूप दिया है। जिससे सारा समाज एक बौद्धिक क्षमता का विकास हो सके। नारी अपने आप कमजोर और असाध्य महसूस ना करें।

सन्दर्भ सूची

1 टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, ज्योतिलोक प्रकाशन–दिल्ली, संस्करण–2012, पृष्ठ–18

2 टाकभौरे सुशीला, संघर्ष–सिलिया, ज्योतिलोक प्रकाशन–दिल्ली, संस्करण–2012, पृष्ठ–49, 50

3 टाकभौरे सुशीला, संघर्ष–सिलिया, ज्योतिलोक प्रकाशन–दिल्ली, संस्करण–2012, पृष्ठ–54

4 टाकभौरे सुशीला, संघर्ष–छौआ माँ, ज्योतिलोक प्रकाशन–दिल्ली, संस्करण–2012, पृष्ठ–76

5 टाकभौरे सुशीला, अनुभूति के घेरे–बँधी हुई राखी, ज्योतिलोक प्रकाशन–दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ–66

6 टाकभौरे सुशीला, अनुभूति के घेरे–गलती किसकी है, ज्योतिलोक प्रकाशन–दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ–72

7 टाकभौरे सुशीला, टूटता वहम–मंदिर का लाभ, अनिरूद्ध बुक्स–दिल्ली, संस्करण–2012, पृष्ठ–48